ब्रेस्ट आयरनिंग : लैंगिक अमानवीय प्रथा का एक आलोचनात्मक विश्लेषण

सुश्री इंदु सिंह 'इंदुश्री' [1*]

[1] स्ववित्तीय जनभागीदारी शिक्षक व इंटरनेशनल योग मास्टर, स्वामी विवेकानंद शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, नरसिंहपुर (म.प्र.) पिन - 487001

प्राप्त:15 सितम्बर 2025
स्वीकार:25 सितम्बर 2025
विधा: समाजशास्त्र

संप्रेषक लेखक
सुश्री इंदु सिंह 'इंदुश्री'
pritambhadanisanyal@gmail.com

शोधपत्र का उद्धरण
सिंह, इंदू, (2025). ब्रेस्ट आयरनिंग: लैंगिक अमानवीय प्रथा का एक आलोचनात्मक विश्लेषण, JESS, 1(1), 59-62.

सारांश

यह शोध पत्र ब्रेस्ट आयरनिंग (स्तन इस्त्री) की अमानवीय और कम रिपोर्ट की गई प्रथा का आलोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। यह प्रथा, जो मुख्य रूप से पश्चिम और मध्य अफ्रीका के कुछ हिस्सों, जैसे कैमरून, नाइजीरिया, चाड और बेनिन से संबंधित है, वैश्विक प्रवास के साथ यूके जैसे विकसित देशों में भी फैल गई है। इस क्रूर प्रक्रिया में युवा, अल्पवयस्क लड़कियों के स्तन ऊतक (breast tissue) को विकसित होने से रोकने के लिए गर्म वस्तुओं (जैसे पत्थर या स्पाटुला) से दागा जाता है। चौंकाने वाली बात यह है कि इस कृत्य के पीछे का उद्देश्य लड़कियों को यौन उत्पीड़न, बलात्कार और कम उम्र में गर्भावस्था से 'बचाना' होता है। संयुक्त राष्ट्र के अनुसार, यह प्रथा विश्व स्तर पर लगभग 3.8 मिलियन लड़कियों को प्रभावित करती है और इसे लिंग आधारित हिंसा के तहत 'अंडर-रिपोर्टेड क्राइम' की श्रेणी में रखा गया है। यह विश्लेषण स्थापित करता है कि यह प्रथा पुरुषों के दुराचार पर नियंत्रण लगाने के बजाय, पितृसत्तात्मक मानसिकता के कारण पीड़ित पर ही अत्याचार करने का एक वीभत्स परिणाम है, जिसके गंभीर शारीरिक और मनोवैज्ञानिक दीर्घकालिक परिणाम होते हैं। इस शोध का निष्कर्ष है कि इस कुप्रथा के दमन के लिए वैश्विक जागरूकता और पितृसत्तात्मक संरचना के खात्मे पर ध्यान केंद्रित करना आवश्यक है।

शब्द कुंजी: ब्रेस्ट आयरनिंग, लड़कियाँ, पितृसत्तात्मक

1. परिचय

दुनिया भर के समाजों में, महिलाओं को अक्सर पुरुषों द्वारा बनाए गए नियमों और संरचनाओं का पालन करना पड़ता है, जिसे सामान्यतः पितृसत्ता कहा जाता है। यह व्यवस्था न केवल महिलाओं के लिए दोयम दर्जे के व्यवहार को जन्म देती है, बल्कि पुरुषों द्वारा किए गए यौन दुराचार या हिंसा के लिए भी अंततः महिला को ही प्रतिबंधों और प्रताड़नाओं का शिकार होना पड़ता है। पितृसत्ता की इस भेदभावपूर्ण सोच का सबसे क्रूरतम उदाहरण ब्रेस्ट आयरनिंग है। यह एक ऐसी दर्दनाक पारंपरिक प्रथा है जिसमें किशोरावस्था की नाजुक कन्याओं के विकसित हो रहे वक्षस्थल को गर्म पत्थरों, हथौड़ों, या सरिया से दबाया या दागा

जाता है। इसका मुख्य उद्देश्य उनके उभारों के विकास को रोकना, उन्हें सपाट दिखाना, और इस तरह पुरुषों की 'गंदी नज़र' व हवस से बचाना माना जाता है।

यह प्रथा कैमरून से उत्पन्न हुई, जहाँ यह माना जाता है कि, जिन लड़कियों के स्तन विकसित होने लगते हैं, वे यौन गतिविधि के लिए तैयार हैं। कम उम्र में रेप और गर्भावस्था से अपनी बेटियों को बचाने के लिए, माताएँ पुरुषों पर प्रतिबंध लगाने के बजाय, अपनी मासूम बच्चियों को यौन रूप से अनाकर्षक बनाने की इस अमानवीय प्रक्रिया का सहारा लेती हैं। यह अभ्यास एक गहरे मानवाधिकार संकट को दर्शाता है और इसके तत्काल उन्मूलन के लिए एक वैश्विक प्रयास की आवश्यकता है।

2. कार्यप्रणाली और वैश्विक प्रसार

चूँकि यह एक सैद्धांतिक और आलोचनात्मक विश्लेषण है अतः तथ्य संस्थागत रिपोर्टों और अकादमिक साहित्य की समीक्षा पर आधारित हैं।

2.1. भौगोलिक विस्तार और व्याप्ति

ब्रेस्ट आयरनिंग मुख्य रूप से पश्चिम अफ्रीकी देशों जैसे कैमरून, नाइजीरिया, चाड, बेनिन, टोगो, गिनी-बिसाऊ और दक्षिण अफ्रीका में पाई जाती है। कैमरून में किए गए एक सर्वेक्षण (GIZ, 2005) के अनुसार, 10 से 82 वर्ष की लगभग 25% महिलाओं ने इस प्रक्रिया से गुज़रा है। प्रवासन के कारण, यह प्रथा अब लंदन, यॉर्कशायर, एसेक्स और पश्चिमी मिडलैंड जैसे यूके के महानगरीय क्षेत्रों में अफ्रीकी डायस्पोरा समुदायों के भीतर भी रिपोर्ट की जा रही है।

2.2. संयुक्त राष्ट्र द्वारा मान्यता

संयुक्त राष्ट्र (UN) जनसंख्या कोष के अनुमानों के अनुसार, दुनिया भर में करीब 3.8 मिलियन (38 लाख) लड़कियाँ इस यातना को सह चुकी हैं। UN ने ब्रेस्ट आयरनिंग को लिंग-आधारित हिंसा से संबंधित पाँच अंडर-रिपोर्टेड अपराधों में से एक के रूप में वर्गीकृत किया है।

3. स्वास्थ्य जोखिम और दीर्घकालिक परिणाम

असहनीय शारीरिक पीड़ा के अलावा, ब्रेस्ट आयरनिंग लड़कियों के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को गंभीर रूप से बाधित करती है। यह प्रक्रिया अक्सर 10 वर्ष की आयु के आसपास शुरू होती है, जब माँ द्वारा ही कई महीनों तक यह यातना दी जाती है।

डॉक्टर्स और शोधकर्ताओं के अनुसार, इसके संभावित स्वास्थ्य परिणाम निम्नलिखित हैं-

- गंभीर दर्द और ऊतक क्षति
- फोड़े और सिस्ट का विकास
- स्तन संक्रमण
- स्तनों के आकार में विषमता या पूर्ण विकास न होना
- स्तनपान कराने में कठिनाई

- दीर्घकालिक सूजन के कारण संभावित रूप से स्तन कैंसर का खतरा
- मनोवैज्ञानिक आघात शर्म, चिंता और आत्म-सम्मान में कमी

4. आलोचनात्मक चर्चा

इस प्रथा की मूल विडंबना यह है कि यह पीड़ित को दंडित करती है न कि दोषी को। यह तर्क कि ब्रेस्ट आयरनिंग बच्चियों की हिफ़ाज़त करती है, पुरुषों की आपराधिक या हिंसक सोच को पूरी तरह से अनदेखा करता है। यह तर्क पितृसत्ता को मजबूत करता है, जो यह मानता है कि महिला का शरीर पुरुष की हवस का कारण है, और इसलिए महिला को ही अपने शरीर को 'छिपाना' या 'विकृत' करना चाहिए। यदि ये नियम और प्रक्रियाएँ उन पुरुषों पर लागू की जातीं जो यौन हिंसा के अपराधी हैं, तो सामाजिक स्थिति अब तक बदल चुकी होती। यह एक स्पष्ट प्रमाण है कि नारी का शरीर हर जगह एक वस्तु मात्र समझा जाता है। मी टू जैसे अभियानों के बावजूद, जब तक समाज में मूलभूत पितृसत्तात्मक मानसिकता कायम रहेगी, तब तक नारी सुरक्षित नहीं हो सकती।

5. कानून और कानूनी स्थिति

अधिकांश प्रभावित देशों में ब्रेस्ट आयरनिंग को रोकने के लिए कोई विशिष्ट, समर्पित कानून नहीं बनाया गया है, जिससे इसका दमन मुश्किल हो जाता है। अफ्रीका के उन देशों में, जहाँ यह सबसे अधिक प्रचलित है, इसे सीधे तौर पर आपराधिक घोषित करने वाला कोई विशिष्ट कानून अभी भी नहीं है। जहाँ विशिष्ट कानून नहीं हैं, वहाँ अधिकारियों को इसे बाल क्रूरता, हमला या शारीरिक दुर्व्यवहार से संबंधित मौजूदा कानूनों के तहत देखना पड़ता है। यूके में भी ब्रेस्ट आयरनिंग को प्रतिबंधित करने वाला कोई विशिष्ट कानून नहीं है। हालांकि, इसे बाल दुर्व्यवहार का एक गंभीर रूप माना जाता है, और इसे करने वाले पर बाल क्रूरता या गंभीर हमले के लिए मुकदमा चलाया जा सकता है। पुलिस इस तरह के मामलों को व्यक्तिगत रूप से जाँचती है।

अंतर्राष्ट्रीय रुख: संयुक्त राष्ट्र ने ब्रेस्ट आयरनिंग को लिंग आधारित हिंसा से संबंधित पाँच सबसे कम रिपोर्ट किए गए अपराधों में से एक के रूप में वर्गीकृत किया है। मानवाधिकार संगठन और निकाय इसके खिलाफ कानूनी ढाँचे बनाने और कड़े दंड दिए जाने की माँग कर रहे हैं । संक्षेप में, यह एक ऐसा 'अंडर-रिपोर्टेड क्राइम' है जो अभी भी हो रहा है, और इसके उन्मूलन के लिए ठोस, विशिष्ट कानूनी ढाँचे की कमी एक बड़ी चुनौती बनी हुई है।

6. निष्कर्ष और अनुशंसाएँ

ब्रेस्ट आयरनिंग की प्रथा एक जघन्य मानवाधिकार उल्लंघन और लिंग आधारित हिंसा का एक विकृत रूप है। यह उन सभी अपराधों में से एक है जिनके लिए सामाजिक समाधान पुरुषों के व्यवहार को बदलने के बजाय महिला के शरीर को विकृत करने में खोजा जाता है।इस अत्याचार को समाप्त करने के लिए केवल कानून या अंतर्राष्ट्रीय निंदा पर्याप्त नहीं है। इस विकृति को जड़ से ख़त्म करने के लिए हर तरह से कार्य किये जाने की आवश्यकता है जिसके लिए कुछ सुझाव इस प्रकार हैं-

- **माताओं की भूमिका -** माताओं को ही पितृसत्ता की इस विरासत को तोड़ते हुए अपनी बेटियों की हिफाज़त के लिए अमानवीय परंपराओं को त्यागना होगा।
- **कानूनी कार्रवाई -** यूके जैसे देशों में इसे बाल शोषण माना जाता है और इसे कानूनी अपराध घोषित करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रयास होने चाहिए।
- **पुरुषों की शिक्षा -** लड़कों और पुरुषों को यौन हिंसा, सहमति और महिलाओं के सम्मान के बारे में व्यापक शिक्षा देना सबसे महत्वपूर्ण है।

इसके अतिरिक्त केवल पितृसत्तात्मक मानसिकता का खात्मा ही विश्व में नारियों को सुरक्षित स्थान प्रदान कर सकता है।

लेखक का योगदान

सुश्री इंदु सिंह – शोधपत्र का शीर्षक, शोध संरचना, आलेख लेखन

वित्तपोषण के स्रोत

इस शोध के लिए किसी भी संस्था या संगठन से किसी प्रकार का वित्तपोषण प्राप्त नहीं हुआ।

आभार

लेखक, प्राचार्य, शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, नरसिंहपुर, म.प्र. को उनके कृपापूर्ण अनुमोदन एवं सहयोग के लिए हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करती हैं।

हितों के टकराव का वक्तव्य

लेखक यह घोषित करते हैं कि इस शोध-पत्र के प्रकाशन के संबंध में उनका किसी भी प्रकार का हितों का टकराव नहीं है।

संदर्भ

1. BSW ICB. (2022). Breast ironing. (UN estimates, prevalence in UK, health risks).
2. Africa Health Organisation (AHO). (n.d.). Breast ironing fact sheet. (Key facts, 3.8 million figure, UN classification).
3. Metropolitan Police. (2025). Breast ironing (flattening). (Definition, health issues, UK legal status as child abuse).
4. National FGM Centre. (n.d.). Breast flattening. (Use of heated objects, goals, spread, UK legal status).
5. Nkwelle, N. N. (2010). The long-term health-related outcomes of breast ironing in Cameroon (Doctoral dissertation, Walden University).
6. BMJ. (2019). Breast ironing. (Definition, use of heated objects, health risks including potential for cancer, legal status in UK).
7. Office of the United Nations High Commissioner for Human Rights (OHCHR). (2011). Breast ironing as a harmful traditional practice in Cameroon. (Origin, early practice, prevalence).
8. The Guardian. (n.d.). News reports on UK prevalence of breast ironing. (Referenced in multiple sources).